462. = Prasangabu. 15, b. d. पुनकृतं भाषितं.

464. = Çuk. ed. Bomb. S. 19. a. b. उदये मिवता रक्ता रक्तशास्तमये तथा.

466. Внавтр. 2, 58 lith. Ausg. III. а. उद्वासिता . d. म्राप्यते st. मास्यते.

470. Vgl. Spruch 3792.

471. = KAVITÂMŖТАК. 54.

472. Çатакâv. 63. а. उड्ता: b. रामान्धं पुनराष्ठ . Внактв. 1,15 lith. Ausg. III. а. यद्ता: st. उद्दत्त. d. मध्यस्थापि.

477. Çатака̂v. 73. d. ह्र्रात्परित्यडयताम् Виактр. 1,80 lith. Ausg. III. d. नती (d. i. तती) st. जना.

483. = KAN. 83 bei Weber. a. गृहीता हि. c. परे लग्नं. d. काएकेनैव.

488. Någ. Ġan. Çl. 4. Nach einem Pekinger Druck (No. 547 des Asiat. Depart., neu im Asiat. Museum) ist 끼'여성'5'끼 zu emendiren. Schiefner.

489. = Kan. 73 bei Weber (b. विद्यपाय st. प्रकापाय). Качітамятак. 92.

492. = Prasañcábh. 8, a (a. उर्गा नि॰, धम्मिलकानां. c. उपरिमुरतिबंदः). Ça-такâv. 65 (c. स्वंद st. स्विन).

498. = Кар. 100 bei Weber. с. d. काकीकनकसूत्रेण कालसर्पी निः.

499. = VRDDHA-KAN. 7,14. d. परिस्रव st. परीवाह.

505. Çатакаv. 18. b. Richtig विद्य st. विणिय.

507. = \hat{K} л். 29 bei Weber (b. शत्रुर्विचारिणी und शत्रुर्दिचारिणी für च ट्य $^{\circ}$). Vrddha- \hat{K} л். 6,11.

524. Çатакаv. 3. d. चुल्या st. चतुर्या. Böhtl. — d. Sollte statt auf verblümte Weise es nicht vielmehr heissen vermöge Höflichkeit oder Dienstbeflissenheit? Schütz.

533. = Mahan. 210. a. इ:खस्य st. कप्टस्य.

536. a. एकस्यापि न यः शक्ता Comm.

547. = Kan. 27 bei Weber. Vaddha-Kan. 3,15 (a. b. एकेन मुष्कवृत्तेण द्ख्यमानेन विक्रिना).

551. = Kan. 28 bei Weber (d. Auch त्या st. यया). Vrddha-Kan. 3, 14.

553. d. Statt स्र्य: will Aufrecht स्क्रय: lesen.

567. Внатт. 1,29 lith. Ausg. III. d. 7व st. 3а.

569. = Vврдна-Кар. 3,5. ρ . मार्रिमध्येवसानेषु eine Ausg. d. न त्यज्ञित च ते नृपं.

571. Внактр. 3,64 lith. Ausg. III. d. नव st. भव.

576. = Çатакаv. S, 84. Sайзквтара́тнор. 47. а. ते ते st. एते Beide; स्वार्थस्य वाधेन ये Saй. b. मध्यमा: पर्कीयकार्यकुशला: स्वा ° Saй. c. पर्क्ति ये: स्वार्थते। कृन्यते Saй.